कलीसिया अध्याय 44

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों मे समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **प्रकाशितवाक्य 4-7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (प्रकाशितवाक्य 4-7) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]* **(17) यूहन्ना 16:13**

दो-दो करके **पुनरावलोकन** करें।

(17) यूहन्ना 16:13। परन्तु जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 20**

परिचय दें। **यूहन्ना 20:1-31** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। यूहन्ना अध्याय 20 से 21 यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने और मरियम मगदलीनी और उसके चेलों के समक्ष प्रगट होने का वर्णन करता है। पुनरुत्थान मानव इतिहास की सबसे बड़ी घटना का दूसरा भाग है। यूहन्ना 20:30-31 में उसके सुसमाचार के उद्देश्य का वर्णन है।

यद्यपि पहली नज़र में ऐसा लगता है कि बाइबल के चारों सुसमाचारों की पत्रियों में (मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना) लिखी गई गवाहियों में विरोधाभास हैं, इन कथित विरोधाभासों को संतोषजनक ढंग से समझाया जा सकता है ताकि कोई अनसुलझा विरोधाभास न रहे। जब हम चारों सुसमाचारों को एक साथ पढ़ते हैं, तो *कोई भी ऐसी घटना नहीं है जो पूरी कहानी से समबन्ध न रखती हों।* चारों सुसमाचारकों ने स्त्रियों और यीशु

के चेलों की गवाहियों को कई बार सुना और अन्त में प्रत्येक ने अपने सुसमाचार में उन्हें लिखा, जिसे वह महत्वपूर्ण मानते थे।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 14:1-31 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

खोज 1. यीशु मसीह की पुनर्जीवित देह।

सुसमाचारों का वर्णन यह बताता है कि यीशु मसीह के पुनरुत्थान वाली देह को कोई भी नहीं रोक सका, न ही उसके चारों और लपेटा गया कपड़ा और न ही एक बन्द चट्टान की कब्र। वह अपने चेलों से मिलने के लिए बन्द फाटकों और दरवाज़ों से गुजरा। और वह अपनी इच्छानुसार उन पर प्रगट हुआ और उनके सामने से चला गया।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अब उसके इस शारीरिक रूप ने ईश्वरीय रूप के गुणों को धारण कर लिया था और उसका यही मानवीय रूप सर्वव्यापी हो गया। यीशु के दो रूप हैं : एक ईश्वरीय रूप और एक शारीरिक रूप। पृथ्वी पर तिरस्कृत या स्वर्ग में उठाये जाने के बाद की स्थिति में उसके पाए जाने वाले रूप को एक साथ नहीं मिलाया जा सकता, जिससे कि एक रूप दूसरे रूप के गुणों का हिस्सा बन जाये। पुनरूत्थान के समय उसके दोनों रूप अपरिवर्तित, अपरिवर्तनीय, भिन्न, भ्रमित न करने वाले या एक जैसे परन्तु अविभाज्य और पृथक न होने वाले हैं। इस प्रकार प्राचीन मसीही कलीसियाओं ने हमेशा से ही यीशु मसीह के दोनों रूपों को स्वीकार किया है।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

इसके अलावा, यह यीशु मसीह की *शारीरिक आत्मा* नहीं थी जो कब्र में से जी उठी थी, (जैसा कि उदारवादी सिखाते हैं), क्योंकि वह मरा नहीं था, बल्कि परमेश्वर पिता के साथ था (लूका 23:46)! यह यीशु की *शारीरिक देह* थी जो मृतकों में से पुनर्जीवित हुई थी! यीशु की देह कोई *भूतप्रेत या परछाईं नहीं थी* (जैसा कि डोकेटिज्म के अनुयायी सिखाते हैं), लेकिन एक वास्तविक देह थी! अपने चेलों को अपनी देह को छूने के लिए कहकर (लूका 24:39; 1यूहन्ना 1:1) और उनके साथ भोजन करके (लूका

24:40-43; यूहन्ना 21:12-13) यीशु ने यह साबित किया कि यह उसकी वास्तविक देह थी।

यीशु की पुनर्जीवित देह *पूरी तरह से अलग देह* नहीं थी, लेकिन यह उसकी अपनी दीन-हीन देह थी जिसे उसने अपनी मृत्यु से पहले धारण किया था और जो कि उसके पुनरुत्थान के समय एक महिमान्वित देह में पूरी तरह से परिवर्तित हो गयी थी (फिलिप्पियों 3:21)। 1 कुरिन्थियों 15:42-44,53-54 के पद यीशु मसीह की पुनुर्जीवित देह और भविष्य में मसीहियों के बारे में निम्नलिखित बातें सिखाते हैं : पुनुर्जीवित देह:

- अविनाशी (पवित्र) है, अर्थात् यह कभी भी बूढ़ी, बीमार या कमजोर नहीं होगी और यह फिर कभी नहीं मरेगी। इसे अमरता के साथ धारण किया जाता है। यह अनन्त जीवन, अनन्त आशीष और परमेश्वर की उपस्थिति में हमेशा के लिए मौजूद रहेगी।
- महिमान्वित है, अर्थात्, यह परमेश्वर के प्रेम, पवित्रता, धार्मिकता, सामर्थ्य और ज्ञान जैसी ईश्वरीय स्वभाव की सहभागी है।
- सामर्थी है, अर्थात्, इसमें अलौकिक क्षमताएँ हैं और यह एक सामर्थी व्यक्तित्व है!
- आत्मिक है, अर्थात्, यह पवित्र आत्मा द्वारा नवीनीकृत और उसके अनुसार चलती है।

  संसारभर के मसीही जन देह के पुनरुत्थान की आशा लगाए हुए हैं! तब उनकी शारीरिक देह यीशु मसीह की महिमान्वित पुनरुत्थान वाली देह के समान होगी!

20:30-31

***खोज 2.* चमत्कारी चिन्ह, जिन्हें यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में लिखें।**

प्रेरित यूहन्ना कहता है कि उसने अपने सुसमाचार में चमत्कारी चिन्हों का चयन करके लिखा ताकि उसके सुसमाचार को पढ़ने वाले यह विश्वास करें कि यीशु मसीह (मसीहा) है, वह परमेश्वर का पुत्र है, और अपने विश्वास के द्वारा वे अनन्त जीवन प्राप्त करें। लेकिन यह भी कि यीशु मसीह में विश्वास करने वाले विश्वास करते रहें और अनन्त जीवन का अनुभव करते रहें।

वे चिन्ह इस प्रकार थे : पानी का दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1-12), सूबेदार के पुत्र का चंगा होना (यूहन्ना 4:43-54), बेतहसेदा के कुण्ड पर बीमार व्यक्ति का चंगा होना (यूहन्ना 5:1-15), चमत्कारी रूप से पाँच हज़ार लोगों को भोजन करवाना (यूहन्ना 6:1-15), जन्म से अन्धे की आँखें खोलना (यूहन्ना 9:1-14) और मृतकों में से लाज़र का पुनरुत्थान (यूहन्ना 11:1-46)। लेकिन सबसे बड़ा चिन्ह मृतकों में से यीशु मसीह का पुनरुत्थान था (यूहन्ना 20:1-10)!यूहन्ना के सुसमाचार में पाए जाने वाले चमत्कारों को "चिन्ह" कहा जाता है, क्योंकि वे यीशु मसीह के संदर्भ में विशिष्ट सत्यों की शिक्षा का परिचय देते हैं। इसलिए, यहाँ तक कि मन्दिर से व्यापारियों के निकाले जाने को (यूहन्ना 2:13-17) और यरूशलेम में विजयी प्रवेश (यूहन्ना 12:12-19) को "चिन्ह" कहा जा सकता है।यूहन्ना का सुसमाचार *चिन्हों की एक पुस्तक* है। यह चिन्हों के अर्थ के साथ यीशु मसीह के अद्भुत कार्यों का भी वर्णन करती है! इन चिन्हों का उद्देश्य केवल एक ही है : यीशु मसीह में लोगों के विश्वास को बनाए रखना! बाइबल में आश्चर्यकर्मों का

उद्देश्य यीशु मसीह की वास्तविकता, सच्चाई और उपस्थिति को दिखाना है। यीशु मसीह चाहता है कि लोग आश्चर्यकर्मों पर नहीं, वरन् स्वयं यीशु मसीह पर ध्यान दें! सभी चमत्कार यीशु मसीह की ओर इशारा करते हैं और यीशु मसीह के बारे में विशिष्ट सत्य सिखाते हैं! उदाहरण के लिए, पाँच हज़ार लोगों को भोजन खिलाना सिखाता है कि यीशु जीवन की रोटी है। वह मेरे लिए भी जीवन की रोटी है!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 20:1-31 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछें जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

20:1-2

प्रश्न 1. **हम यह कैसे जान सकते हैं कि उस समय कब्र पर सिर्फ मरियम मगदलीनी ही अकेली स्त्री नहीं थी?**

ध्यान दें। यदि हम केवल यूहन्ना के सुसमाचार को पढ़ेंगे, तो हमें यह आभास होगा कि अन्य सुसमाचारों में से जो कुछ हम जानते हैं, उसके सम्बन्ध में विरोधाभास है। उदाहरण के तौर पर, कब्र पर यूहन्ना सिर्फ एक स्त्री के विषय में बताता है, जबकि मत्ती दो, मरकुस तीन और लूका तीन से अधिक स्त्रियों के विषय में बताते है।

हालाँकि, यदि हम चारों सुसमाचारों को एक साथ पढ़ते हैं, तो *किसी भी घटना के सम्बन्ध में कोई विरोधाभास नहीं है।* लूका स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि स्त्रियों के समूह में तीन से अधिक स्त्रियाँ थीं जो कब्र पर गईं (लूका 24:10)। मत्ती और मरकुस इन बातों को संक्षिप्त में बताते हैं। उदाहरण के लिए, मत्ती केवल मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम का उल्लेख करता है। प्रेरित यूहन्ना शायद यह मानता है कि उसके पाठक अन्य तीन सुसमाचारों से परिचित हैं। इसलिए वह अपनी कहानी को मरियम मगदलीनी तक ही सीमित रखता है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यूहन्ना यह कहता है कि उस समय कब्र पर मौजूद रहने वाली वह एकमात्र स्त्री थी। पद 2 में, मरियम मगदलीनी स्वयं प्रेरित पतरस से कहती है, "वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम *(बहुवचन)* नहीं जानतीं, कि उसे कहाँ रख दिया है (यूहन्ना 20:2)!"

20:3-9

प्रश्न 2. **पतरस और यूहन्ना को अचानक विश्वास क्यों किया?**

ध्यान दें। जब मरियम मगदलीनी ने पतरस और यूहन्ना को खाली कब्र के बारे में बताया, तब वे कब्र की ओर भागे। उन्होंने कब्र के भीतर जाकर देखा कि वहाँ पर वह अँगोछा जो उसके सिर पर बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ नहीं, वरन् अलग से एक जगह पर लपेटा हुआ पड़ा था। इस विचार की व्याख्या इस बात से निर्धारित नहीं की जा सकती कि यीशु को कपड़े के निम्न छिद्र से गुजरना पड़ा होगा। हालाँकि, जो स्पष्ट था वो यह कि वह कपड़ा अभी भी वहीं पर पड़ा था, परन्तु यीशु की देह वहाँ नहीं थी! मुहरबन्द कब्र और पहरेदारों ने यह सुनिश्चित कर रखा था कि कोई भी चेला वहाँ आकर यीशु की देह को निकाल कर न ले जाए या कोई डाकू उसे चुरा कर न ले जाए। अन्यथा, वह कपड़ा भी अभी तक वहाँ पर पड़ा नहीं होता! जैसे ही पतरस और यूहन्ना को इस बात का एहसास हुआ कि यीशु मृतकों में से जी उठा है, वैसे ही वे दोनों विश्वास करने लगे : कि यीशु सच में वही था जिसकी उसने पहले ही भविष्यद्वाणी की थी, कि वह मृतकों में से जी उठेगा और अभी वह जीवित है!

इसलिए बाइबल ने पतरस और यूहन्ना के लिए नए अर्थ निकालने शुरू कर दिए। यूहन्ना 20:9 कहता है कि "पहले वे पवित्रशास्त्र को नहीं समझ पाए थे"। हालाँकि वे पुराने नियम को कई बार पढ़ चुके थे, लेकिन उन्होंने भजन 16 और यशायाह 53 जैसे अंशों को नहीं समझा। भजन 16:10 कहता है, "क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।" यशायाह 53:10-11 कहता है, "तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब तू उसका (मसीहा का) प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश (Hebrew: zer>a) देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर उसे देखेगा (मृत सागर की पुस्तक के अनुसार : वह जीवन का प्रकाश देखेगा)। (मार्गदर्शिका 5, परिशिष्ट 1 देखें)।

अब पतरस और यूहन्ना को अचानक यह एहसास हुआ कि पुराने नियम में लिखे हुए यह वचन यीशु मसीह के पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी करते हैं! उन्होंने महसूस किया कि यीशु मसीह का पुनरुत्थान परमेश्वर की अनन्त योजना का एक हिस्सा था और इसलिए इस योजना का पूर्ण होना अनिवार्य था - इसे "होना भी चाहिए"। पुनर्जीवित प्रभु ने बाद में इसकी पुष्टि की, "यह वही है जो मैंने तुमसे कहा था जबकि मैं तुम्हारे साथ था : सब कुछ पूरा होना चाहिए जो मेरे बारे में मूसा की व्यवस्था, नबियों द्वारा और भजन में लिखा है" (लूका 24:44)। नए नियम में यीशु मसीह ने स्वयं कई बार भविष्यद्वाणी की कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और तीसरे दिन वह मृतकों में से जी उठेगा (मत्ती 16:21; 20:19; लूका 9:22; 18:33)[1]।

20:14-17

प्रश्न 3. **यीशु ने मरियम मगदलीनी से यह क्यों कहा कि वह उसे अभी नहीं छू सकती।**

ध्यान दें। जब यीशु मसीह मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया, तो उसने पहले सोचा कि वह माली है।

अपने अविश्वास के कारण, उसे यीशु को जीवित देखने की उम्मीद नहीं थी, बल्कि वह उसके शव की तलाश कर रही थी! हालाँकि, जब यीशु ने उसे उसके अरामी नाम मरियम से पुकारा, और अपनी मूल भाषा (अरामी) में उससे बात की, तो उसने यीशु को पहचान लिया और उसने (उसे) छूने की इच्छा जताई जैसे कि वह उसे कभी जाने ही नहीं देना चाहती थी।

यीशु की मृत्यु से पहले, मरियम मगदलीनी ने लम्बे समय तक यीशु को अपने चेलों के साथ प्रत्यक्ष रूप से संगति करते हुए देखा था। उसने अब यह मान लिया था कि संगति की यह पूर्व विधि फिर से शुरू होने जा रही थी। इसलिए यीशु ने उससे कहा कि वह उसे छू नहीं सकती, क्योंकि वह अभी तक पिता के पास नहीं गया। यीशु ने स्वयं को उस स्त्री द्वारा छूने पर आपत्ति नहीं जताई, लेकिन वह उसे यह बता रहा था कि अब से उसके और उसके चेलों के बीच का सम्बन्ध बदल गया है। उन चेलों के साथ उसकी दैनिक संगति की अवधि अब समाप्त हो गई है। वह अब एक को प्रगट होता है, और फिर दूसरे को। इसलिए वह उससे कहता है कि वह ऐसा विचार न करे कि उसे छूने से वह उसे हमेशा अपने साथ रख सकती है। वह जल्द ही स्वर्ग में पिता के पास चढ़ने वाला था। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद ही वह और अन्य चेले फिर से उसके साथ संगति कर पाएँगे! और यह संगति पहले की संगति से कहीं अधिक समृद्ध और धन्य होगी! यह स्वर्ग में जीवित परमेश्वर की पृथ्वी की कलीसिया के साथ संगति होगी!

20:30-31

प्रश्न 4 **– यीशु कुछ स्त्रियों से यह क्यों कहता है कि वह गलील को जा रहा है और मरियम मगदलीनी से कहता है कि वह अपने स्वर्गीय पिता के पास वापस जाने वाला है?**

ध्यान दें।

(1) पुनरुत्थान और प्रगट होना।

मत्ती 28:7 में, स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा कि वे शीघ्र जाएँ और उसके चेलों से कहें, "कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया।" और मत्ती 28:16-20 में हम पढ़ते हैं कि कैसे यीशु वास्तव में गलील के एक पहाड़ पर अपने चेलों को दिखाई दिया। हालाँकि स्वर्गदूत ने कहा कि यीशु अपने चेलों से पहले गलील को जा रहा था, परन्तु हम जानते हैं कि यीशु गलील में पहली बार अपने चेलों के सामने प्रगट नहीं हुआ था, परन्तु यरूशलेम और उसके आसपास के क्षेत्रों में भी प्रगट हुआ था। यह एक विरोधाभास नहीं है, क्योंकि यीशु बाद में अपने चेलों से गलील में मिला था और इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यीशु अपने चेलों से पहले गलील तक नहीं पहुँचा। यीशु ने उससे कहीं ज्यादा कार्य किये थे जितना कि उसने अपने दूत के माध्यम से प्रगट किये! वह उनसे यरूशलेम *और* गलील में मिला!

---

(2) स्वर्ग पर चढ़ना और नया सम्बन्ध।

यूहन्ना 20:17 में, यीशु ने स्वयं मरियम मगदलीनी से कहा, "मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि 'मैं अपने पिता, और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ' "। यीशु ने अन्य स्त्रियों की तुलना में मरियम मगदलीनी को अधिक जानकारी दी। उन्हें उसके पुनरुत्थान और चेलों के प्रति उसकी उपस्थिति के बारे में बताना था। उसे उसके स्वर्ग पर चढ़ाये जाने और उसके नए सम्बन्धों के बारे में बताना था। क्योंकि जब वह अपने स्वर्गीय पिता के पास जायेगा, उसके चेलों के साथ उसका सम्बन्ध बदल जायेगा!

एक ओर, यीशु ने इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर के साथ उसके और उसके चेलों के सम्बन्ध में *क्या समानता है*। अब उसने उन्हें "मेरे भाइयों" (यूहन्ना 20:17) कहकर पुकारा, जो "मेरे मित्रों" (यूहन्ना 15:13-15) की तुलना में कहीं अधिक गहरा शब्द है। इसका मतलब यह है कि उनका सम्बन्ध आत्मा का सम्बन्ध होगा, वे एक ही परिवार के होंगे और उन्हें एक ही अनन्त विरासत मिलेगी। आत्मिक दृष्टिकोण से, परमेश्वर केवल उन लोगों का "पिता" है, जिन्होंने एक जीवित विश्वास द्वारा परमेश्वर के पुत्र को ग्रहण किया (तुलना करें यूहन्ना 8:41-44)।

दूसरी ओर, यीशु ने इस बात पर बल दिया कि *परमेश्वर* के साथ उसके और उसके चेलों के सम्बन्ध में *क्या अंतर है*। यीशु मसीह *स्वभाव से* (अर्थात् मानव रूप मे) "परमेश्वर का पुत्र" है, जबकि उसके चेले *केवल गोद लिए हुए* "परमेश्वर के पुत्र" हैं (इफिसियों 1:5)। फिर भी, उनकी संगति की घनिष्ठता अधिक है। एक आत्मिक अर्थ में परमेश्वर जो यीशु मसीह का पिता है, वह चेलों का भी गोद लिए जाने से उनका पिता है! यीशु परमेश्वर और पिता की ही पीढ़ी है!

20:21-23

प्रश्न 5. **यीशु मसीह ने अपने चेलों को किस अधिकार से संसार में भेजा?**

ध्यान दें।

(1) जो महान आज्ञा यीशु मसीह ने प्रेरितों को दी वो सबसे ऊपर थी।

जिस दिन यीशु जीवित हुआ, उसी शाम वह अपने दस चेलों और अन्य लोगों के पास आया, जो वहाँ एकत्रित थे (लूका 24:33)। जब उसने उन्हें अपनी हथेलियों के निशान दिखाए, तब उन्हें विश्वास हुआ कि वह पुनर्जीवित यीशु मसीह है।

फिर उसने उन्हें महान आज्ञा दी। यूहन्ना 17:18 में यीशु ने परमेश्वर के पिता से कहा, "जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा"। अब यूहन्ना 20:21 में यीशु अपने ही चेलों से कहते हैं, " जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ"। शब्द "भेजे" का अर्थ "प्रेरित के रूप में भेजना" है। ये शब्द सबसे पहले यीशु मसीह के बारह प्रेरितों के लिए निर्देशित किए गए थे। वे आरम्भ से उसके साथ थे और उन्होंने उसके जीवन (शब्द और कर्म), मृत्यु और उसके पुनरुत्थान (प्रेरितों के काम 1:21-22) को देखा था।

यीशु मसीह के प्रेरितों को यहूदिया से लेकर सामरिया और अन्यजातियों तक उसके अधिकारिक गवाह बनना

था (प्रेरितों के काम 1:8)। उन्हें पूरी दुनिया में जाना था और सारी सृष्टि को सुसमाचार का प्रचार करना था (मरकुस 16:15)। उन्हें सभी देशों में जाकर लोगों को "यीशु मसीह का चेला" बनाना था। यीशु ने उन पर और उनकी गवाहियों पर अपनी कलीसिया (मत्ती 16:18) का निर्माण किया। यीशु ने उन्हें परमेश्वर के राज्य में लोगों को सम्मीलित करने या बाहर करने की कुँजी या अधिकार दिया (मत्ती 16:18-19; 18:18-19)। लेकिन यीशु मसीह के प्रेरितों के पास कोई उत्तराधिकारी (बिशप के रूप में) नहीं है, क्योंकि किसी ने भी इस योग्यता को प्राप्त नहीं किया (प्रेरितों के काम 1:12-22)।

जब एक बार मसीही कलीसिया को यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा स्थापित किया जाता है, तब इस महान आज्ञा का सम्बन्ध पूर्ण रूप से मसीही कलीसिया के साथ होता है। अब कलीसिया के सारे प्राचीन और सदस्य एक साथ मिलकर इस महान आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं! चेले, नये चेलें बनाते हैं और मण्डलियाँ नई मण्डलियाँ बनाती हैं।

(2) पवित्र आत्मा का कार्य यीशु मसीह के प्रेरितों को सेवकाई का अधिकार देना (प्रेरितों की सेवकाई)।

यूनानी ग्रन्थ कहता है: "यीशु ने उन पर फूँका (या किसी चीज़ को प्रसारित करने के उद्देश्य से साँस ली) (Greek: emfusaó) (aorist) और उनसे कहा, 'पवित्र आत्मा लो। जिनके पाप तुम क्षमा करो वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं (Greek: afiémi) (perfect tense, passive) जिन के तुम रखो, वे रखे गए हैं (Greek: krateó) (perfect tense, passive) (पाप क्षमा किए गए हैं या क्षमा नहीं किए गए)!'" इस "फूँक" (तुलना करें यूहन्ना 3:8) का प्रतीकात्मक महत्व था। उत्पत्ति 2:7 में उसी क्रिया का उपयोग किया जाता है जब परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी (तत्वों) से मनुष्य को बनाया था और उसके नथनों में जीवन की "श्वास" फूँकी और मनुष्य एक जीवित आत्मा बन गया। परन्तु यूहन्ना 20:22-23 में *यह शारीरिक जीवन को प्रदान करना नहीं है, बल्कि आत्मिक कार्य के लिए अपने प्रेरितों को अधिकार देना है।* मत्ती 16:18-19 और मत्ती 18:1,18 से स्पष्ट है कि "फूँकने" या "श्वास" प्रतीकात्मक रूप से वह अधिकार है जो यीशु मसीह के प्रेरितों के कार्यों से सम्बन्धित है। यह अधिकार थोमा को भी दिया गया था जो उस समय अनुपस्थित था, जैसा कि यूहन्ना 17:18 के बाइबल पद में स्पष्टरूप से देखा जा सकता है जहाँ यीशु ने अपने प्रेरितों को जगत में भेजा। और इसका आशय यह भी था कि यह अधिकार पौलुस को भी दिया गया था, जैसा कि प्रेरितों के काम 26:16-18 रोमियों 1:1 और 1 कुरिन्थियों 9:1 में उसकी बुलाहट से स्पष्ट होता है। यीशु मसीह के (बारह) प्रेरितों के पास लोगों के पापों को क्षमा करने का अधिकार था (यदि वे पश्चाताप करते हैं तो) या अपने पापों को बनाए रखते हैं (यदि वे सुसमाचार की घोषणा के विरूद्ध स्वयं को कठोर कर लेते हैं)।

बाइबल में चार बार पवित्र आत्मा प्राप्त होता है।

- पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के वचन की भविष्यद्वाणी करने का विशेष कार्य करने के लिए पवित्र आत्मा को प्राप्त किया (यहेजकेल 2:1-7; 1 पतरस 3:10-12)
- नए नियम में यीशु मसीह ने उद्धार या न्याय करने के अपने विशेष कार्य के लिए पवित्र आत्मा को

प्राप्त किया (यशायाह 11:2-5;61:1-2; यूहन्ना 1:32-34;3:34)

- यीशु मसीह के प्रेरितों को परमेश्वर के राज्य/कलीसिया ("यीशु मसीह का प्रेरित (चेला)" जिसे कार्य और अधिकार सौंपा गया हो) के दरवाज़े को बन्द करने (Greek: dedemenon, perfect tense) या इसे खोलने का कार्य (Greek: lelumenon, perfect tense) (दरवाज़ा तब खुला या बन्द रहता है) सौंपा गया है और उन लोगों को पाप से प्रायश्चित के विषय में सुसमाचार सुनाने का कार्य जो यीशु मसीह के बलिदान पर विश्वास करते हैं या उन लोगों को दण्ड की आज्ञा सुनाने का कार्य जो अपने अविश्वास के कारण स्वयं को कठोर कर लेते हैं, सौंपा गया है (यूहन्ना 20:21-23; तुलना करें मत्ती 16:18-19; 18:18; यूहन्ना 20:23; प्रेरितों के काम 13:9-11; 1 कुरिन्थियों 5:3-5; 2 कुरिन्थियों 2:10; 10;8)। प्रेरितों को यह अधिकार तब मिला जब उन्हें पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के साथ बपतिस्मा दिया गया।

- सभी मसीही पवित्र आत्मा को तब प्राप्त करते हैं जब वे यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (फिर से जन्म लेते हैं, आत्मा का बपतिस्मा लेते हैं) (मरकुस 1:8; यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; 7:37-39; 14:16-18; प्रेरितों के काम 1:5; 2:38-39; 11:14-18; 15:7-9; रोमियों 8:9-10; 1 कुरिन्थियों 12:13; 2 कुरिन्थियों 1:21-21; 22; इफिसियों 1:13-14; तीतुस 3:5-8)।

प्रेरितों को दी गई महान आज्ञा और अधिकार को परमेश्वर से अलग नहीं माना जा सकता। वे यीशु मसीह की आत्मा (पवित्र आत्मा) की उपस्थिति और राज्य से जुड़े हुए थे । प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा के अलावा स्वयं कोई अधिकार नहीं था। उन्हें पवित्र आत्मा से अलग कार्य करने की अनुमति नहीं थी। पवित्र आत्मा हमेशा परमेश्वर के वचन (बाइबल) (यूहन्ना 14:26; 16:13-15; तुलना करें 14:6; 17:18; इफिसियों 6:17) के माध्यम से बात करता है और प्रेम से सम्बन्धित है। आत्मिक अगुवों के पास उनके (उदाहरण के लिए आधुनिक कलीसिया के अधिकारी : जैसे पॉप्स, बिशप, प्राचीन, पासबान, आदि) द्वारा किए गए पापों की क्षमा के बारे में मनमाने प्रचार, मसीही समुदाय से बाहर (बहिष्कार) निकालना, दण्ड और शाप देने का कोई अधिकार नहीं है।

जबकि यह प्रेरितों का कार्य है कि वह लोगों को पापों की क्षमा का *प्रचार करें* कि उनके पाप क्षमा हो गए हैं (या नहीं), यह केवल परमेश्वर है जो उनके पापों को *प्रभावी ढंग से क्षमा करता है* (या नहीं)! यह क्रियाएँ "उनके पापों को क्षमा कर दिया जाता है" या "उनके पापों को क्षमा नहीं किया जाता है" दिखाते हैं कि क्षमा करना परमेश्वर का कार्य है। प्रेरितों को परमेश्वर से कोई अलग कार्य या अधिकार नहीं सौंपा गया है। प्रेरितों (और अन्य आत्मिक अगुवों के रूप में - जैसे कि पॉप) को भी दोषी होने का आश्वासन नहीं दिया जाता है। गलातियों 2:11 से साफ पता चलता है कि प्रेरित पतरस दोषी नहीं नहीं था! यीशु मसीह के प्रेरितों का कार्य परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और सिखाना है, लेकिन लोगों के पापों को प्रभावी रूप से क्षमा करने या लोगों के पापों को बनाए रखने का अधिकार सिर्फ परमेश्वर का है! बाद में, प्रेरित पौलुस ने सही कहा, "प्रभु ने अपने प्रत्येक कार्य को सौंपा हैं। मैंने बीज बोया। अपुल्लोस ने इसे सींचा, लेकिन परमेश्वर ने इसे बढ़ाया" (1 कुरिन्थियों 3:5-6)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 20 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 20:1-31 से सम्भव अनुप्रयोगों के उदाहरण।

20:5-8. यीशु मसीह के पुनरुत्थान से सम्बन्धित ऐतिहासिक साक्ष्यों का अध्ययन करें और उन पर विश्वास करें!

20:11. मसीही विश्वास चंगाई से पहले दुखित भावनाओं को वास्तविक और आवश्यक अभिव्यक्ति के रूप में लेता है।

20:18. दूसरों को बताएँ कि परमेश्वर ने आपके जीवन में क्या कार्य किए हैं।

20:21. यीशु मसीह ने अपनी सेवकाई को किस प्रकार पूरा किया, इसके द्वारा जितना हो सके उतना सीखें।

20:22. विश्वास करें कि यीशु मसीह आपको उस सेवकाई के लिए तैयार करेगा जिसके लिए उसने आपको बुलाया है।

20:26-29. संदेह न करें और यीशु मसीह के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों विश्वास करें। आप आशीषित होंगे!

20:30-31. यीशु मसीह द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म उन सभी चिन्हों से बढ़कर हैं, जो यह दर्शाते है कि यीशु मसीह कौन है और उसने क्या कार्य किए।

20:31. जब आप यह विश्वास करने लगेंगे कि यीशु ही मसीहा और परमेश्वर का पुत्र है तब आपको अनन्त जीवन को प्राप्त कर लेंगे।

2. मसीही 20:1-31 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं मृत्यु से डरना नहीं चाहता। मसीही आशा यह है कि पुनरुत्थान के समय, मेरी दीन देह यीशु मसीह की महिमान्वित देह के समान परिवर्तित हो जाएगी! क्योंकि मुझे पहले से ही पता है कि मृत्यु पर विजय पा ली

गई है और मुझे फिर से जीवित कर दिया जाएगा, मैं अपने भविष्य को आनन्दित आशा और विश्वास के साथ देख सकता हूँ! मैं लगातार मृतकों के पुनरुत्थान में अपने विश्वास को बनाए रखना चाहता हूँ!

मुझे इस बात का एहसास है कि महान आज्ञा मूल रूप से यीशु मसीह के प्रेरितों को दी गई है। हालाँकि यीशु मसीह के प्रेरितों का कोई उत्तराधिकारी नहीं है, फिर भी महान आज्ञा मसीही कलीसिया के लिए है। संसार की प्रत्येक स्थानीय मण्डली जो अपने प्राचीनों के अधीन है, वह भी इस महान आज्ञा में सम्मिलित होनी चाहिए। संपूर्ण जगत में सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए और पृथ्वी के प्रत्येक राष्ट्र में यीशु मसीह के चेले (परिपक्व और सेवा कार्य करने वाले मसीही) बनाने चाहिए। जैसे ही मैं सुसमाचार का प्रचार करूँगा, परमेश्वर लोगों को यीशु मसीह की ओर ले आएगा और ईश्वरीय तरीके से उनके पापों को क्षमा करेगा। मैं लगातार इस बात से अवगत रहना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे यीशु मसीह से अलग कोई कार्य या अधिकार नहीं सौंपा है! जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 15:5 में कहा है, "जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 20 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।
(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 20 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रकाशितवाक्य 8-11** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(18) यूहन्ना 16:14।**
   रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. <u>प्रार्थना।</u> इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **<u>अपने लेखे का अद्यपन करें।</u>** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।